जीवन का आधार
प्रबल शुक्र

जहां प्रेम है, वहां शुक्र है। जहां कला है, वहां शुक्र है। जहां सुगंध है, वहां शुक्र है। जहां विनम्रता है, वहां शुक्र है। जहां दाम्पत्य में सम्मान है, वहां शुक्र है। जहां धन के साथ संस्कार हैं, वहां शुक्र है और जहां जीवन केवल जीया नहीं जाता, बल्कि रसपूर्वक, सौन्दर्यपूर्वक और कृतज्ञता के साथ अनुभव किया जाता है वहां निश्चित ही शुक्र की दिव्य उपस्थिति है।

नवग्रहों में शुक्र ग्रह अर्थात् भोर का तारा अत्यन्त प्रभावशाली ग्रह है। सूर्योदय से ठीक पहले पूर्व दिशा की ओर दृश्यमान शुक्र का जीवनमें उदय होना सूर्योदय के समय प्रकृति में छाई लालिमा के समान ही जीवन में सौन्दर्य, प्रेम, आकर्षण, धन, विलासिता, कला और दाम्पत्य सुख का उदय है। वैसे शुक्र का प्रभाव इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन है। **शुक्र केवल भौतिक सुखों का कारक नहीं है, बल्कि यह जीवन में रस, कोमलता, सृजन, संवेदनशीलता, संबंधों की मधुरता, भोग और योग के संतुलन तथा जीवन को सुन्दर बनाने वाली चेतना का प्रतिनिधि है।**

जीवन में शुक्र की प्रधानता व्यक्तित्व में सहज आकर्षण, वाणी में माधुर्य, व्यवहार में विनम्रता, विचारों में सृजनशीलता और कर्मों में कलात्मकता प्रदान करती है। इसी कारण ज्योतिष, तंत्र, वेद, पुराण और जीवन-दर्शन में शुक्र को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

शुक्र ग्रह के स्वामी शुक्राचार्य केवल दैत्यों के गुरु नहीं थे, बल्कि वे नीति, ज्ञान, विज्ञान, औषधि, पुनर्जीवन शक्ति और गूढ़ विद्याओं के महान आचार्य भी थे। यही कारण है कि **शुक्र ग्रह को केवल सौन्दर्य का ग्रह नहीं, बल्कि ज्ञानयुक्त भोग, विवेकपूर्ण ऐश्वर्य और सृजन की शक्ति का प्रतीक माना गया।**

पुराणों में वर्णन मिलता है कि शुक्राचार्य ने कठोर तपस्या द्वारा भगवान शिव से मृत-संजीवनी विद्या प्राप्त की। यह कथा प्रतीकात्मक रूप से बताती है कि शुक्र वह शक्ति है जो मृतप्राय परिस्थितियों में भी जीवन का रस पुनः भर सकती है। जहां सब कुछ सूखा, नीरस और समाप्त प्रतीत हो, वहां शुक्र की शक्ति जीवन में पुनः आकर्षण, प्रेम और सृजन का संचार करती है।

जीवन को एक वृक्ष माना जाए तो सूर्य उसकी आत्मा

शुक्र का उच्च स्वरूप व्यक्ति को प्रेम से ऊपर उठाकर करुणा तक ले जाता है। प्रारम्भ में मनुष्य आकर्षण से प्रेम करता है, फिर प्रेम से समर्पण सीखता है और अंततः समर्पण से करुणा तक पहुंचता है। सही अर्थों में शुक्र जीवन की पूर्णता का प्रतीक है, यदि शुक्र की ऊर्जा को सही दिशा में प्रयुक्त किया जाये।

शुक्र का आध्यात्मिक स्वरूप है – जब भोग, योग में बदलने लगे, जब सौन्दर्य साधना बन जाए, जब सम्बन्ध सेवा बन जाएं। तब शुक्र अपनी दिव्यता प्रकट करता है।

है, चन्द्र उसका मन है, मंगल उसकी शक्ति है, बुध उसकी बुद्धि है, गुरु उसका ज्ञान है, और शुक्र उस वृक्ष के फूल, सुगंध और रस हैं।

बिना फूलों और सुगंध के वृक्ष जीवित तो रह सकता है, किन्तु आकर्षक नहीं बनता। शुक्र की शक्ति के अभाव में जीवन चल तो सकता है, पर उसमें रस, माधुर्य और आनन्द का अभाव होता है।

माधुर्यं सर्वभूतेषु सौन्दर्यं च मनोहरम्।
यस्य जीवनमध्यास्ते शुक्रस्तस्य प्रसन्नकृत्।।

अर्थात् जीवन में माधुर्य, सौन्दर्य और मनोहरता शुक्र की कृपा से ही संभव है। शुक्र केवल बाहरी रूप-रंग तक सीमित नहीं है; यह भीतर की कोमलता और सौन्दर्य चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

शुक्र बलवान होता है तब व्यक्ति सम्बन्धों को निभाने वाला, लोगों को जोड़ने वाला और वातावरण को सुखद बनाने वाला होता है। उसकी उपस्थिति ही लोगों को आकर्षित करती है। यह आकर्षण केवल शारीरिक नहीं होता, बल्कि उसकी वाणी, दृष्टि, व्यवहार और व्यक्तित्व में एक अदृश्य चुम्बकत्व होता है।

शुक्र का सबसे प्रमुख सम्बन्ध दाम्पत्य जीवन से माना जाता है। विवाह केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं, बल्कि दो आत्माओं के बीच प्रेम, समर्पण, आकर्षण और सहयोग का बंधन है। इस बंधन की मधुरता शुक्र से संचालित होती है।

श्रेष्ठ शुक्र से पति-पत्नी के बीच सम्मान, संवाद, आकर्षण और सहयोग बना रहता है। यही शुक्र ऊर्जा की न्यूनता संबंधों में दूरी, कटुता, असंतोष, आकर्षण की कमी अथवा भावनात्मक रिक्तता के रूप में दिखाई देती है। इसलिए वैदिक ज्योतिष में विवाह-सम्बन्धी विश्लेषण में शुक्र की स्थिति को विशेष महत्व दिया जाता है।

शुक्र का सम्बन्ध कला से भी अत्यन्त गहरा है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, अभिनय, साहित्य, अलंकरण, वास्तु, फैशन, सुगन्ध, आभूषण, सौंदर्य-उद्योग इन सबका स्वामी शुक्र माना जाता है। जब कोई कलाकार संगीत में डूबकर रचना करता है, जब कोई कवि शब्दों में सौन्दर्य भर देता है, जब कोई मूर्तिकार पत्थर में प्राण फूंक देता है वहां शुक्र की प्रेरणा सक्रिय होती है।

ज्योतिष शास्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि शुक्र मजबूत हो तो व्यक्ति के भीतर सौंदर्य पहचानने और उसे अभिव्यक्त करने की क्षमता अधिक होती है।

जीवन में धन होना पर्याप्त नहीं; उस धन का उपयोग किस प्रकार सौन्दर्य, सुविधा, परिवार, प्रेम और संस्कृति के विकास में हो यह शुक्र प्रदान करता है।

जीवन में ज्ञान होना पर्याप्त नहीं; उस ज्ञान में विनम्रता और आकर्षण कैसे आये यह शुक्र प्रदान करता है।

शक्ति होना पर्याप्त नहीं; उस शक्ति में सौम्यता और संतुलन कैसे आये यह भी शुक्र का ही प्रदान करता है।

शुक्र और लक्ष्मी तत्व

महालक्ष्मी का सीधा सम्बन्ध शुक्र के साथ है। जहां स्वच्छता, सुगंध, मधुरता, सौहार्द, सम्मान होता है वहां महालक्ष्मी निवास करती है और यह सब गुण शुक्र के हैं। अतः शुक्र की शुभता लक्ष्मी को भी आमन्त्रित करती है। शुक्र के प्रभाव में जीवन की गुणवता स्वतः ही धन को आमन्त्रित कर देती है।

शुक्र का सम्बन्ध भौतिक सुविधाओं से है। लेकिन यहां एक सूक्ष्म अंतर समझना आवश्यक है। शुक्र विलासिता का प्रतीक अवश्य है, किन्तु अंधभोग का नहीं। **शुक्र की उच्चता व्यक्ति को सुविधाओं का उपयोग करना सिखाती है, उनका दास बनना नहीं।**

शुक्र ज्ञान के साथ जुड़ा हो तो व्यक्ति सम्पन्न होकर भी विनम्र रहता है। यदि शुक्र अज्ञान के साथ जुड़ जाए तो व्यक्ति दिखावे, व्यसन, असंयम और भोग में उलझ सकता है। इसलिए शुक्र की ऊर्जा को दिशा देना आवश्यक है।

शुक्र - सृजन बीज

शुक्र का सम्बन्ध प्रजनन शक्ति, ओज, तेज और जीवन ऊर्जा से है। शरीर में जो सृजन क्षमता है, जो बीज शक्ति है, जो पुनरुत्पादन की सामर्थ्य है वह शुक्र तत्व से जुड़ी मानी गई है। प्राचीन ग्रन्थों में 'शुक्र धातु' को अत्यन्त मूल्यवान माना गया है। यह केवल शारीरिक शक्ति का नहीं, बल्कि मानसिक स्थिरता, स्मृति और ओज का भी आधार है।

तांत्रिक दृष्टि से शुक्र ऊर्जा आकर्षण और सम्मोहन का भी आधार है। तंत्र ज्ञान में वास्तविक आकर्षण बाहरी सजावट से नहीं, भीतर की ऊर्जा से उत्पन्न होता है। जब मन शुद्ध, विचार सुंदर और भावनाएं करुणामयी हों, तब शुक्र अपनी उच्चतम अभिव्यक्ति देता है।

जीवन में आर्थिक सफलता और शुक्र का भी गहरा सम्बन्ध है। कई लोग बहुत परिश्रम करते हैं, ज्ञान भी रखते हैं, अवसर भी मिलते हैं, फिर भी जीवन में वह चमक नहीं आती। इसका एक कारण शुक्र ऊर्जा की कमी भी हो सकती है। व्यापार में प्रस्तुति, ग्राहक से व्यवहार, वातावरण की सुंदरता, उत्पाद की आकर्षकता, ब्रांडिंग, प्रतिष्ठा इन सबमें शुक्र की भूमिका होती है। **जीवन में शुक्र का वास्तविक महत्व केवल प्राप्ति में नहीं, अनुभूति में है।**

न रूपं न धनं तस्य न कुलं न पराक्रमः।
माधुर्यं यदि नास्त्यन्ते निष्फलं जीवनं नृणाम्।।

जीवन में माधुर्य नहीं है तो रूप, धन, कुल और पराक्रम भी अधूरे रह जाते हैं।

शुक्र को मजबूत करना है तो पहले जीवन में सौन्दर्य, वाणी में मधुरता, घर में स्वच्छता, सम्बन्धों में सम्मान, भोजन में शुद्धता, वस्त्रों में सादगी, व्यवहार में विनम्रता और विचारों में कोमलता लानी होगी। जहां अशिष्टता, अव्यवस्था, कटुता और असंयम है, वहां शुक्र कमजोर पड़ने लगता है।

शुक्र जीवन को जीने योग्य बनाता है। सूर्य हमें अस्तित्व देता है, पर शुक्र उस अस्तित्व में सौन्दर्य भरता है। गुरु हमें ज्ञान देते है, पर शुक्र उस ज्ञान को आकर्षक अभिव्यक्ति देता है। मंगल हमें शक्ति देता है, पर शुक्र उस शक्ति को सौम्यता देता है। चन्द्र हमें भावना देता है, पर शुक्र उन भावनाओं को प्रेम में बदलता है। लक्ष्मी हमें सम्पन्नता देती हैं, पर शुक्र उस सम्पन्नता को सरसता में बदलता है।

शुक्र सिद्धि प्रदात्री - रसेश्वरी मातंगी

आनन्द, विलास, सौन्दर्य, गृहस्थ सुख, पुरुषार्थ प्राप्ति, प्रेम, आकर्षण निरन्तर रस वर्षा और विलासित ही जीवन रस है।

वृक्ष की गरिमा फल-फूल और हरे भरे पत्तों से है, उसी प्रकार जीवन गरिमा ऐश्वर्य, विलास, आनन्द के रस से पूर्ण होती है।

'रसौः वै सिद्धि...' जिसके जीवन में रस है वही सिद्ध पुरुष है। रस के अधिष्ठाता भगवान शिव हैं और रसेश्वरी भगवान शिव की शक्ति महाविद्या मातंगी हैं। रसेश्वरी मातंगी जीवन के प्रत्येक पक्ष को रस पूर्ण करने वाली शक्ति है।